दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL5**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Akshay Temrawal

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 07/09/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 3 0 9 2 2 1

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 119

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। उत्तरों को और बेहतर बनाने का प्रयत्न करते रहें।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) यूनीकोड और हिन्दी

आधुनिक काल में कम्प्यूटर का महत्व बढ़ गया है। कम्प्यूटर में प्रयुक्त भाषा के सन्दर्भ में यूनीकोड की भूमिका अहम है।

पहले आस्की कोड की व्यवस्था थी जिसमें हिन्दी के सभी अक्षर के लिए कोड नहीं हो पाता था। ~~आ~~ यूनीकोड के आगमन के पश्चात यह समस्या समाप्त हो गयी।

यूनीकोड 16 बिट्स की संरचना है जिसमें ~~अ~~ हिंदी ~~क~~ व विश्व की लगभग सभी भाषा के अक्षरों को समाहित करने की क्षमता है।

यूनीकोड के बाद हिन्दी का ~~कम्यु~~ कम्प्यूटर क्षेत्र में विकास तीव्र हो गया। अब संसाधन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के ऐप्लिकेशन सॉफ्टवेयर के विकास तीव्र गति से होने लगे।
इनमें प्रमुख हैं: 1) अक्षर
2) लिपि
3) शब्दरत्न

यूनिकोड के बाद की बोर्ड लेआउट ~~और~~ और ~~फान्ट्स~~ फॉन्ट्स का विकास भी तीव्र हो गया।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

प्रश्न 3

जयन्त विष्णु नार्लीकर ब्रह्माण्ड के स्थिर विज्ञान के वैज्ञानिक हैं। इन्होंने सौरमण्डल और ब्रह्माण्ड के क्षेत्र में अनेक शोधकार्य किये।

अपने इंग्लैंड दौरे में वे वहाँ के वैज्ञानिक के साथ मिलकर अपने कार्य करते रहे। भारत वापसी के बाद उन्होंने विज्ञान सम्बन्धी धारणाओं को प्रचलित करने का दायित्व सम्भाला।

वैज्ञानिक अनुसंधान के अलावा विज्ञान के लोकप्रचलन में इन्होंने अहम भूमिका अदा की तथा हिन्दी में विज्ञान लेखन को तीव्रता प्रदान की।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनकी रचनाएँ : ब्रह्माण्ड की कुछ झलकें, अंतरिक्ष की यात्रा, धूमकेतु आदि ने हिन्दी साहित्य को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

ECIL

देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण का सर्वप्रथम प्रयास हैदराबाद की ई. सी. आई. एल. (ECIL) कम्पनी ने सन 1977 में फॉट्रान नामक कम्प्यूटर भाषा में हिन्दी का पहला एप्लिकेशन बनाया।

इसके बाद सी-डेक कम्पनी ने शब्दरत्न, सिद्धार्थ नामक मशीन ने तीन भाषा का शब्द संसाधन बनाया।

इसी प्रक्रिया में अनेक शब्द संसाधनों का निर्माण हुआ जैसे: लिपि, अक्षर, शब्दरत्न, शब्दावली ~~इत्यादी~~ इत्यादि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिपि के सम्बन्ध में अनेक फॉन्टस तथा की-बोर्ड लेआउट, तत्पश्चात यूनीकोड के बाद यह प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान हुई।

माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी ने हिन्दी में सिस्टम सॉफ्टवेयर की रच. रचना की।

इस प्रकार हिन्दी की कम्प्यूटरीकरण की प्रक्रिया धीरे-धीरे बढ़ते गयी और आज हिन्दी कम्प्यूटर क्षेत्र में भी एक सक्षम भाषा है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

विकारी पद :- वे पद जो विकारी तत्वों (लिंग, काल, वचन, वाच्य, भाव) के प्रभाव से बदल जाते हैं, विकारी पद कहलाते हैं।

विकारी पद

- संज्ञा (राम)
- सर्वनाम (वह)
- क्रिया (खेलना)
- विशेषण (काला)

→ संज्ञा को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया गया है। व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक। जातिवाचक के दो उपभेद हैं
अ) समूहवाचक ब) द्रव्यवाचक

→ सर्वनाम के छः भेद हैं
पुरुषवाचक, प्रश्नवाचक, सम्बन्धवाचक
निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेषण के चार भेद हैं —

1) गुणवाचक 2) सार्वनामिक

3) परिमाणबोधक 4) संख्यावाचक

आर्थ अविकारी पद :- वे पद जो विकारी तत्वों के प्रभाव से परिवर्तित नहीं होते, अविकारी पद कहलाते हैं।

अविकारी पद

- क्रिया विशेषण
- संयोजक
- सम्बन्धबोधक
- विस्मयादिबोधक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

मानक हिन्दी की वाक्य संरचना को अलग - अलग प्रतिमानों के आधार पर बाँटा गया है।

संरचना की दृष्टि से वाक्यों को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है—

1) सरल वाक्य
जैसे : वह राम है।

2) संयुक्त वाक्य
जैसे : बारिश होने के कारण सड़क खराब हो गई।

3) मिश्र वाक्य
जैसे : तबियत खराब होने के कारण राम श्याम को अवकाश के बारे में नहीं बता सका।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता की दृष्टि से

1) स्वतंत्र वाक्य

उदा० राम घर जा रहा है।

2) परतंत्र वाक्य

राम : कहाँ जा रहे हो ?

श्याम : दिल्ली (परतंत्र)

प्रयोग की दृष्टि से

1) प्रश्नवाचक वाक्य
2) विधेयवाचक वाक्य
3) निषेधवाचक वाक्य
4) सन्देहवाचक वाक्य
5) संकेतवाचक / शर्तवाचक वाक्य
6) निश्चयवाचक वाक्य
7) अनिश्चयवाचक वाक्य
8) आदेशवाचक वाक्य.

ठीक है / 5/10 परकाश भी बताएं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये। 20

हिन्दी भाषा के लिखित रूप में प्रयुक्त होने वाली लिपि देवनागरी लिपि कहलाती है।

देवनागरी लिपि की वर्णमाला का वर्गीकरण वैज्ञानिक है तथा इसकी अनेक विशेषताएँ जैसे एक ध्वनि चिन्ह के लिए एक अक्षर।

सभी लिपियों की कुछ विशेषताएँ होती हैं तो कुछ कमियाँ भी होती है। देवनागरी की कुछ सीमाएँ इस प्रकार है।

1) वर्णमाला बहुत लम्बी है जिससे सीखने में परेशानी बढ़ती है।

2) लम्बी वर्णमाला का परिणाम यह हुआ की की-बोर्ड में 400 के आसपास टाइप रखने पड़ते है जो इसके कम्प्यूटर विकास में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाधक है तथा इसमें रोमन जैसी तीव्रता नहीं आ पाती है।

3) मात्राओं का आगे-पीछे तथा ऊपर-नीचे लगाना इसे अवैज्ञानिक बनाता है।

4) अहिन्दी भाषी व्यक्ति के लिए 'रं'व' और ख, भ ब-म, ध-घ आदि भ्रम पैदा करते हैं।

5) र की रेफ ',', 'c', 'c' जैसे प्रयोग इनमें जटिलता लाते हैं।

6) पंचमाक्षर शब्द अनावश्यक रूप से वर्णमाला की लम्बी कर रहे हैं।

7) 'ष', ॡ जैसे अक्षरों का प्रयोग अब नहीं होता इसे हटा कर वर्णमाला छोटी करनी चाहिए।

→ अक्षरों की बनावट जटिल है

जैसे: क, ल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8) शब्द लिपि होने के कारण इसमें सभी ध्वनि चिन्हों को व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए, जो कि नहीं है।

ऑ, क़ जैसे प्रयोग को अपना लेना चाहिए।

9) अनुस्वार - अनुनासिक के प्रयोग को सही करना चाहिए

10) संयुक्ताक्षरों से वर्णमाला जटिल और लम्बी होती है।

समग्रतः, अन्य लिपियों की तरह देवनागरी में भी दोष हैं, इसके निवारण हेतु कार्य करना चाहिए तथा इसे एक सरल और समृद्ध लिपि बनाने में सरकार को आगे आना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।

संस्कृत के ~~सरलीक~~ सरलीकरण की प्रक्रिया में संस्कृत की व्याकरण में भी परिवर्तन आया। संस्कृत में तीन लिंगों की व्यवस्था थी जो हिन्दी में दो रह गई। हिन्दी ने नपुंसक लिंग को हटा दिया।

हिन्दी की लिंग व्यवस्था को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है

1) ~~पुलि~~ पुल्लिंग

2) ~~स्त्रिलिंग~~ स्त्रीलिंग

पुल्लिंग :- हिन्दी में सामान्यतः पुल्लिंग आकारान्त होते हैं जैसे : राम, देव

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्रीलिंग :- यह अनेकों प्रकार से अभिव्यक्त किया जाता है। ~~जैसे~~ जैसे: राधा, देवियाँ।

सामान्य नियम

1) पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए अकारान्त को इयाँ जोड़ दिया जाता है।
देव → देवियाँ

2) आकारान्त में ई जोड़कर
~~शेर~~ > शेरनी बकरा > बकरी
गधा > गधी

3) नदियाँ सामन्यत: स्त्रीलिंग में आएगी

4)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

समस्याएँ

एक निश्चित नियम के अभाव में क्षेत्रानुसार लिंग परिवर्तन होता है। जैसे: नदियों के नाम सामान्यतः स्त्रीलिंग में रखा जाता है किन्तु ब्रह्मपुत्र को पुलिंग में रखा गया है।

(२) शत्रुपाति जैसे शब्दों के लिंग निर्धारण में समस्या है। ये शब्द दोनों लिंगों के लिए प्रयुक्त होता है। ऐसे शब्दों के लिए एक नई उभयलिंग को अपनाना पड़ेगा।

स्पष्टतः, नियमों के अभाव में लिंग व्यवस्था के विभिन्न रूप उपलब्ध है, जिनमें सुधार, हिन्दी के विकास के लिए आवश्यक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न या के अतिरिक्त कुछ लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में किशोरीदास वाजपेयी ने काव्य, गद्य, आलोचना जैसी अनेक विधाओं में अपना योगदान दिया, किन्तु हिन्दी के व्याकरण के निर्माण में उनकी सबसे अहम भूमिका रही है।

किशोरीदास की रचना 'ब्रज भाषा का व्याकरण' तथा एक कृति हिन्दी व्याकरण पर छपने के बाद उनका स्थान साहित्यकारों में बढ़ गया था।

इनसे पहले व्याकरण रचना के तीन चरण हो चुके थे। द्विवेदी युग और छायावाद में हिन्दी के परिवर्तनों के साथ नये व्याकरण की आवश्यकता हुई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कुछ आलोचकों ने पहले के व्याकरण में कमियों को भी सामने लाया था। परिणामस्वरूप, नागरी प्रचारिणी सभा में सर्वसम्मति से वाजपेयी जी का नाम इस काम के लिए प्रस्तावित हुआ।

तय हुआ कि राहुल के साथ कुछ अन्य साहित्यकार एक ढाँचा बनायेंगे तथा उसके अनुसार वाजपेयी जी व्याकरण की रचना करेंगे।

किशोरीदास ने पुराने प्रयासों का सहारा लेकर तथा उनकी कमियों को हटा कर नया व्याकरण तैयार किया। इस व्याकरण को तीन अलग-अलग स्तरों के लिए अलग-अलग स्वरूप प्रदान किया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर तथा उच्च स्तर के लिए अलग-अलग पुस्तकों का निर्माण किया

बाजपेयी जी के योगदान के बाद उच्च स्तर पर बी. ए. और एम. ए. हिन्दी का शुभारंभ हुआ

स्पष्टत: किशोरीदास के द्वारा साहित्य के क्षेत्र को उ चिरस्मरणीय योगदान प्रदान हुआ

7½

हिंदी शब्दानुशासन की चर्चा करें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिये। 20

ब्राह्मी लिपि से व्युत्पन्न हुई देवनागरी लिपि हिन्दी भाषा की अभिव्यक्ति हेतु प्रयोग की जाती है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता इसकी ख्याति का प्रमुख कारण है। लिपि की वैज्ञानिक विशेषताएँ—

① वर्णमाला का वर्गीकरण वैज्ञानिक है, जो उच्चारण के स्थान के आधार पर वर्गीकृत है।
यथा: कण्ठ्य, तालु, ओष्ठ, नासिका

② वर्णमाला में पहले स्वर आते हैं तथा बाद में व्यंजन। शेषन में स्वर बीच में ही समाहित है।

③ एक ध्वनि के लिए एक ही चिन्ह की व्यवस्था है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) चिन्हों का उच्चारण सदैव समान रहता है। 'क' का उच्चारण सदैव 'क' ही रहेगा। रोमन मे 'U' को वर्णमाला मे 'यू' उच्चारित करते है किन्तु प्रयोग मे 'PUT' तथा 'CUT' में उच्चारण बदल जाता है।

(5) मात्राओं के प्रयोग के लिए यहाँ पूरी मात्रा नहीं लिखनी पड़ती। रोमन जैसी अन्य लिपियों में पूरी पूरा अक्षर लिखना पड़ता है इससे समय और स्थान बचता है

(6) संयुक्ताक्षर के प्रयोग स्थान और समय दोनों बचाते हैं
जैसे अक्षय > AKSHAY
लगभग दोगुना अक्षरों का प्रयोग करना पड़ा रोमन में।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(7) अनुस्वार और अनुनासिक का प्रयोग इसे सरल बनाता है।

(8) लगभग सभी ध्वनियों को चिन्हित करने की क्षमता है। देवनागरी में जो कमियां थी इसे सुधारा जा चुका है। जैसे ऑ, क़

(9) स्पष्टतः देवनागरी लिपि की वैज्ञानिक विशेषताएँ इसे अन्य लिपियों की तुलना में बेहतर साबित करती है।

और है

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था से संबंधित समस्याओं पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी में दो लिंग व्यवस्था को अपनाया गया है। संस्कृत में यह व्यवस्था तीन भागों में वर्गीकृत थी। हिन्दी ने अपने विकास की प्रक्रिया में नपुंसक लिंग का त्याग दिया।

लिंग व्यवस्था सम्बन्धी कुछ समस्याएँ इस प्रकार हैं—

① नपुंसक लिंग के हट जाने से इस वर्ग के पद पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में समाहित हो गये हैं।

② लिंग परिवर्तन हेतु निश्चित ~~नि~~ व्याकरणसम्मत नियमों का अभाव है, जिसके कारण क्षेत्रों के अनुसार वस्तुओं या पदों का लिंग परिवर्तित हो जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे : पेन को कहीं पर पुल्लिंग माना जाता है तो कहीं पर स्त्रीलिंग में रखा जाता है।

(3) नदियों को सामान्यतः स्त्रीलिंग में रखा जाता है किन्तु ब्रह्मपुत्र जैसे अपवाद इन नियमों को तोड़ देते हैं। अहिन्दी भाषी और विदेशी व्यक्तियों के लिए इसे समझना मुश्किल होगा।

4) ~~राष्ट्रपत्नी~~ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा अध्यक्ष जैसे शब्दों को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया है। इन्हें उभयलिंगी मानकर एक व्याकरण रूप प्रदान करने की आवश्यकता है।

5) अनेक पदों जैसे घर, गाड़ी आदि का लिंग निर्धारण एक समस्या बनी हुई है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कुलमिलाकर, लिंग व्यवस्था को क्षेत्रीय तथा सामाजिक नियमों से हटा कर एक व्याकरणसम्मत नियम में बाँधने की आवश्यकता है

6/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी का विकास एक लम्बी प्रक्रिया और लम्बे समय में हुआ है। समय के साथ-साथ इसमें विभिन्न शब्दों का समावेश होता गया।

निर्माण की दृष्टि से शब्दों को मुख्यत: तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है।

निर्माण की दृष्टि

- रूढ़
- यौगिक
- योगरूढ़

विस्तार करें

इनके अलावा शब्दों का वर्गीकरण पारिभाषा के आधार पर भी किया गया।

(1) पारिभाषिक शब्द
(2) अर्द्धपारिभाषिक शब्द

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ भी न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्रोत की दृष्टि से शब्दों के भण्डार को मुख्यतः चार भागों में बाँटा गया है —

स्रोत की दृष्टि
↓
- तत्सम (कृति)
- तद्भव (हाथ)
- देशज (गमकौआ)
- विदेशी (डाक्टर)

<u>तत्सम शब्द</u> : संस्कृत के शब्दों को हिन्दी में उसी रूप में अपनाया गया, वे तत्सम शब्द कहलाएँ।

<u>तद्भव</u> :- संस्कृत शब्दों का सरल रूप जो प्रचलित हो गया तथा हिन्दी में अपनाया गया वह तद्भव कहलाया।

हस्त > हाथ
अग्नि > आग

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देशज : देश की बोलियों और अन्य भाषाओं से आए शब्द देशज शब्द कहलाए।

जैसे : इडली, डोसा

विदेशी शब्द : देश के बाहर की भाषा के शब्दों को विदेशी शब्दों में रखा गया है। इसमें अंग्रेज़ी > डॉक्टर, पेन, मशीन आदि।

फारसी > गज़ल
पुर्तगाली > टार्च

स्पष्टतः हिन्दी का शब्द भण्डार समृद्ध है तथा इसमें समयानुसार नये शब्दों को धारण करने की ~~क्षमता~~ क्षमता भी है।

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तारसप्तक

1943 ई. में

अज्ञेय द्वारा संचालित तारसप्तक एक युगांतरकारी प्रतीक पत्रिका थी। तारसप्तक के सम्पादन के साथ ही प्रयोगवाद की शुरुआत होती है।

अज्ञेय ने इसे प्रयोगशील का नाम दिया किन्तु आज प्रयोगवाद पर सहमती सहमति स्थापित है।

तारसप्तक में अज्ञेय ने अपने समय के कवियों की कविताएँ और अन्य साहित्यकारों की रचनाएँ को जनसमूह तक पहुँचाया।

तारसप्तक के बाद दूसरा सप्तक तथा तीसरा सप्तक का सम्पादन भी अज्ञेय द्वारा किया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तारसप्तक तथा इसके अन्य भाग में अज्ञेय के दर्शन का प्रभाव दिखाई पड़ता है। मनोविश्लेषणवाद तथा अस्तित्ववाद जिनकी छाप अज्ञेय पर पड़ी है, वे तारसप्तक पर भी असर डालते हैं।

तारसप्तक के माध्यम से अज्ञेय ने ~~प्रयोगशील~~ तथा प्रयोगवाद में ~~अंतर~~ स्पष्ट करने की ~~a~~ कोशिश। भी की थी।

5/10

और बेहतर बनाएँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पंत के पल्लव की भूमिका का महत्त्व

छायावाद के प्रमुख कवियों में पंत एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं छायावाद के अन्य कवियों में निराला, महादेवी तथा प्रसाद हैं

पल्लव की भूमिका में पंत अपने काव्य सम्बंधी धारणाओं को प्रस्तुत करते हैं

1/0

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) साकेत की उर्मिला

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता।
साकेत में उर्मिला के महत्व को प्रतिपादित किया गया है।

पुरुषप्रधान समाज में नारी के महत्व को उजागर करना एक साहस का कार्य है। साकेत में गुप्त जी ने राम-लक्ष्मण-तथा सीता के सन्दर्भों के साथ उर्मिला के बलिदान, समर्पण तथा पतिव्रता स्वरूप को प्रदर्शित किया है।

हिन्दी साहित्य के अनेक काव्य जैसे रामचरितमानस या रामचंद्रिका किसी में भी उर्मिला के चरित्र को उतना महत्व नहीं दिया जिसकी वह हकदार है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस दृष्टि से मैथिलीशरण गुप्त मध्यकाल के तुलसी और रीतिकाल के केशव से आगे निकल जाते हैं।

3/10

गहराई लाएँ
मानक उदाहरण दें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति

छायावाद की प्रमुख कवियित्री महादेवी वर्मा अपने काव्य में निहित रहस्यानुभूति के कारण प्रसिद्ध हैं। महादेवी वर्मा को आधुनिक काल की मीरा भी कहा जाता है।

महादेवी वर्मा के काव्य में आत्मानुभूति, वेदना, भक्ति और रहस्यानुभूति प्रमुख रूप से पाई जाती है। उनका ईश्वर पर विश्वास इस अनुभूति का एक कारण माना जा सकता है।

इनके संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में 'पथ के साथी', मेरा परिवार तथा 'अतीत के चलचित्र' में अलग-अलग रूप में यह रहस्यानुभूति अभिव्यक्त हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पथ के राही में उनके सम्पर्क में रहे प्रमुख लोगों जैसे निराला, का वर्णन किया है।

'मेरा परिवार' में उन्होंने अपने घर के सदस्यों जिनमें पशु-पक्षियों तथा प्रकृति को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। गिल्लू (गिलहरी) मोर आदि को अपनी रचनाओं में समाहित किया है।

आलोचकों ने महादेवी की रहस्यानुभूति के पीछे पारिवारिक प्रेम के अभाव को भी एक कारण माना है।

2/10 अत्यन्त अपर्याप्त

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) हिन्दी के संस्मरण साहित्य-परंपरा का अति संक्षिप्त परिचय देते हुए समकालीन संस्मरण साहित्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. (क) मैथिलीशरण गुप्त के विभिन्न काव्य-ग्रंथों का आधार ग्रहण करते हुए उनकी नारी-भावना का उद्घाटन कीजिये। 20

भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने विभिन्न काव्य ग्रंथों में अपनी नारी सम्बन्धी विचार व्यक्त किये हैं।

गुप्त की प्रमुख रचनाएँ

1) भारत-भारती
2) साकेत
3) ~~स~~ यशोधरा

~~उनके~~ सबसे महत्वपूर्ण काव्य-ग्रंथ भारत-भारती में उन्होंने अतीत खण्ड में नारी की प्रशंसा में कहा है कि भारत की नारी पतिव्रता तथा भगवान से पहले पति को मानती है। उनके त्याग और बलिदान को उन्होंने प्रस्तुत कर पितृात्मक समाज में नारी के महत्व को स्थापित किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

पत्नि

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पत्नी

~~अ~~ उन्होंने उर्मिला (लक्ष्मण की ~~पत्नी~~) को उनका यथासंभव सम्मान दिलाने के लिए साकेत की रचना की। रामचरितमानस, रामचंद्रिका जैसे काव्यों में उर्मिला के महत्व को स्थान नहीं दिया गया। गुप्त ने अपनी प्रगतिशील विचारधारा से उर्मिला को साकेत में उनका स्थान दिलाया।

यशोधरा काव्य में गौतम बुद्ध की ~~पत्नी~~ पत्नि ~~अथवा~~ यशोधरा की वेदना, कष्ट और प्रेम के अनेक संदर्भों को समाज के सामने प्रस्तुत किया।

~~मैथिलीश~~ मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी विभिन्न काव्य-ग्रंथों में नारी के विभिन्न पक्षों को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य रूप प्रदान किया। किन्तु, ~~तो~~ सभी काव्य में नारी के आदर्श, त्याग और सामाजिक बन्धनों सहित अनेक स्वरूप को सामने लाया।

जैसे: भारत-भारती में, पति से पहले भोजन नहीं खाना, पति से पहले नहीं सोना इत्यादि।

समीक्षकों और नारी-वादी आलोचकों ने आक्षेप लगाया कि गुप्त के काव्य में नारी को समता की अधिकार नहीं, जो ~~~~ ~~~~ ~~~~ काव्य में साफ दिखाई पड़ता है।

समग्रत: गुप्त ने यशोधरा और उर्मिला की वेदना और त्याग को समाज के सामने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत कर एक प्रगतिशील कार्य किया किन्तु सामाजिक रीतियों को तोड़कर नारी को समानता का अधिकार नहीं दिला सके। यह कार्य निराला द्वारा सम्पन्न होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी यात्रा-साहित्य में राहुल सांकृत्यायन के प्रदेय पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी यात्रा-साहित्य के दो प्रमुख आधार स्तंभ माने जाते हैं। वे अज्ञेय और राहुल सांकृत्यायन हैं।

राहुल सांकृत्यायन की यात्रा-साहित्य सम्बंधित प्रमुख रचनाएँ

1) तिब्बत की यात्रा
2) लद्दाख की यात्रा
3) रूस के पच्चीस वर्ष
4) यूरोप की यात्रा

राहुल देश-विदेश की यात्रा करने में अग्रणी हैं। उन्होंने नेपाल, श्रीलंका, रूस तथा यूरोप के अनेकों देशों की यात्रा की।

वे घुमक्कड़ धर्म की स्थापना करना चाहते थे। उनका मानना था कि घूमना-फिरना सबसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अच्छा। धर्म है क्योंकि स्वच्छ घुमक्कड़ धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा और अन्य बाधाओं से ऊपर उठ जाता है उनकी प्रेरणा से अनेक युवाओं ने घुमक्कड़ धर्म को अपनाया।

इनके यात्रा वृत्तांत में देश की सामाजिक, ~~साक~~ सांस्कृतिक, लोकप्रचलित नृत्य तथा अन्य रोचक तथ्यों की समाविष्टि होती है। जिससे पाठक को नया जानने की अभिरुचि बनी रही रहती है।

'~~रूस~~ के पच्चीस वर्ष' में उन्होंने ~~रूस~~ रूस की भाषा, वहाँ के खान-पान, लोक नृत्य तथा अनेक लौकिक ~~तथ्यो~~ तथ्यों को ~~समाया~~ उल्लेख किया है जिससे पाठक मानसिक रूप से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रूस की यात्रा कर आता है।

स्पष्टत: राहुल ने यात्रा साहित्य को समृद्ध कर युवा पीढ़ी को यात्रा में दिलचस्पी दिलाई तथा यात्रा साहित्य को नई दिशा प्रदान की।

6/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी रेखाचित्र के विकास में रामवृक्ष बेनीपुरी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रेखाचित्र ने हिन्दी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। गद्य की अन्य विधाओं से मिलने पर भी यह उनसे अलग है।

रेखाचित्र के विकास में महादेवी वर्मा के साथ-साथ रामवृक्ष बेनीपुरी का योगदान अतुलनीय है। रामवृक्ष बेनीपुरी ने संस्मरणात्मक रेखाचित्र तथा रेखाचित्रात्मक संस्मरण दोनों में ही हिन्दी साहित्य को योगदान दिया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ

1) गेहूँ और गुलाब

2) माटी की मूरतें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साहित्य की नई विधा रेखाचित्र में
का लेखकों की शुरुआत में रुचि
कम थी। महादेवी ने अनेक
रेखाचित्र रचें तथा रामवृक्ष बेनीपुरी
के आगमन से रेखाचित्रों के
निर्माण में तीव्रता आई।

7½
और बेहतर बनाएँ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation